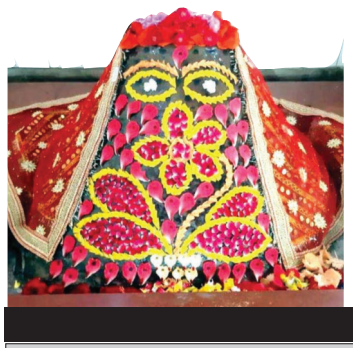

।। श्री गणेशाय नमः ।।

हिन्दी पाक्षिक Fort Nightly

Baat Hindustan ki

बात हिन्दुस्तान की

Baat Hindustan Ki

R N I No. : WBHIN / 2021 / 84049

● विक्रम संवत 2081 वैशाख कृष्ण पक्ष अष्टमी, 1-15 मई 2024 , 1-15 May 2024, ● वर्ष 3 (Year-3), ● अंक 24 ● पृष्ठ 4 (Page-4) ● मूल्य रु. 2 (Price 2/-)

युद्धविराम के लिए तैयार हुआ हमास

लेकिन अमेरिका से मांग ली बड़ी गारंटी, इजरायल को मनाना बाइडेन के लिए बड़ी चुनौती

नई दिल्ली : इजरायल और हमास के बीच युद्ध पिछले छह महीने से भी ज्यादा समय से जारी है। लेकिन इस बीच दोनों में बातचीत चल रही है। हमास ने कहा है कि वह किसी भी सीजफायर डील के लिए तैयार है। लेकिन यह तब संभव होगा जब उसे अमेरिका से इस बात की गारंटी मिलेगी कि सीजफायर के बाद इजरायली फोर्स रफाह में हमला नहीं करेंगे। हमास के प्रवक्ता ओसामा हमदान ने अल जजीरा से बातचीत में कहा, 'हम अभी भी मुख्य मुद्दों के बारे में बात कर रहे हैं। जो पूर्ण युद्धविराम और गाजा से इजरायल की पूरी तरह वापसी है।' उन्होंने आगे कहा, 'दुर्भाग्य से नेतन्याहू की ओर से स्पष्ट बयान आया था, जिसमें कहा गया कि चाहे कोई युद्धविराम हो या न हो, वह राफा के खिलाफ हमला जारी रखेंगे, जिसका मतलब है कि कोई युद्धविराम नहीं होगा।' उन्होंने कहा कि संघर्ष विराम हासिल करने की हमारी समझ का मतलब है कि राफा समेत गाजा में कहीं भी कोई और हमला नहीं होगा। गाजा में युद्धविराम से जुड़ी बातचीत रविवार को फिर शुरू हो सकती है। ब्रिटेन की ओर से जारी विवरण के मुताबिक वार्ताकारों ने लड़ाई को 40 दिनों तक रोकने और फिलिस्तीनी कैदियों की अदला-बदली का

प्रस्ताव रखा है। कतरी, मिस्र और अमेरिकी मध्यस्थों ने शनिवार को काहिरा में हमास प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की। बातचीत से जुड़े हमास के एक वरिष्ठ सूत्र ने बताया कि वार्ता का नया दौर होगा। रूकी हुई बातचीत के लिए एक पक्ष दूसरे को दोषी ठहरा रहा है। हमास के एक वरिष्ठ अधिकारी ने शनिवार देर रात जोर देकर कहा कि समूह किसी भी परिस्थिति में ऐसे युद्धविराम के लिए सहमत नहीं होगा, जिसमें युद्ध का पूर्ण अंत शामिल न हो। उसमें गाजा से इजरायल की वापसी भी शामिल होनी चाहिए।संयुक्त राष्ट्र (संरा) की एक शीर्ष अधिकारी ने शुक्रवार को कहा कि इजराइल और हमास के बीच युद्ध को छह महीने से ज्यादा वक्त बीत जाने और फलस्तीनी क्षेत्र में खाद्य आपूर्ति पर इजराइल द्वारा कड़े प्रतिबंध लगाये जाने के कारण संकटग्रस्त उत्तरी गाजा में अकाल अब अपने चरम पर पहुंच गया है। संरा विश्व खाद्य कार्यक्रम की अमेरिकी निदेशक सिंडी मैक्केन अब तक की पहली ऐसी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय अधिकारी हैं, जिन्होंने उत्तरी गाजा में फंसे नागरिकों के अकाल से जूझने की पुष्टि की है। मैक्केन ने एनबीसी के 'मीट द प्रेस' को दिये साक्षात्कार में कहा, 'यह भयावह है। उत्तर में अकाल चरम पर है और यह स्थिति दक्षिण की ओर बढ़ रही है।'

कूड़े की तस्वीर देखकर कोर्ट ने की टिप्पणी, कहा-

'यह एक भयानक और गंदी स्थिति है'

हावड़ा : शहर में कई जगहें कूड़े के ढेर में तब्दील हो गयी हैं। सारा कचरा सीधे खुले नाले में चला जाता है। कचरा प्रबंधन नियमों का बिल्कुल भी पालन नहीं किया जा रहा है। इससे हावड़ा के बड़े हिस्से में स्थिति दयनीय हो गयी है। बुधवार को राष्ट्रीय पर्यावरण न्यायालय में मामला दायर किया गया। मामले के आवेदन के साथ शिकायत के साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत की गई तस्वीरों को देखकर पर्यावरण न्यायालय ने यह टिप्पणियाँ की 'यह एक भयानक, गंदी स्थिति है।' जिसके मद्देनजर कोर्ट ने राज्य सरकार, राज्य शहरी विकास एवं जल विभाग, राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, हावड़ा नगर निगम समेत सभी पक्षों से अगले चार सप्ताह के भीतर हलफनामा दाखिल करने को कहा है। हलफनामे में स्पष्ट रूप से बताया जाना चाहिए कि उन्होंने ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 को लागू करने के लिए क्या कदम उठाए हैं। मामले की अगली सुनवाई 29 मई को है। हालाँकि, इस मामले के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है। यानी सितंबर 2022 में अदालत ने ठोस और तरल कचरे के प्रबंधन में विफलता के लिए राज्य सरकार पर 3,500 करोड़ रुपये का पर्यावरणीय मुआवजा लगाया। उन्होंने निर्देश दिया कि राज्य उस मुआवजे के पैसे से एक अलग कोष बनाएगा। जो केवल कचरा प्रबंधन पर खर्च किया जाएगा। प्रशासन के सूत्रों के मुताबिक कोर्ट के आदेश के मुताबिक राज्य ने वह फंड बनाया है। जिसके मद्देनजर पर्यावरण कार्यकर्ताओं के एक वर्ग का सवाल है कि अगर कचरा प्रबंधन परियोजना बनाई गई है तो हावड़ा के विभिन्न हिस्सों की यह हालत कैसे हुई? एक पर्यावरणविद् के शब्दों में, 'हावड़ा ही नहीं, कोलकाता समेत राज्य के विभिन्न हिस्सों में कचरा प्रबंधन नियमों के अनुपालन में बड़ा अंतर है।

200 साल से डॉक्टरों की पहचान, आखिर आला के अस्तित्व को लेकर क्यों उठ रहे सवाल?

नई दिल्ली/मुंबई : डॉक्टर 200 साल से अधिक समय से, रोगी की बीमारी के बारे में पूछने, जांचने, सुनने और सटीक निष्कर्ष निकालने के लिए भरोसेमंद मेडिकल उपकरण स्टेथोस्कोप यानी आला पर निर्भर रहे हैं। ऐसा तब तक रहा है जब तक तकनीक ने इसे नहीं बदला। इकोकार्डियोग्राम और बेहतरीन पॉकेट-आकार के अल्ट्रासाउंड उपकरणों के डायग्नोस्टिक क्षेत्र में प्रवेश के साथ स्थितियां बदल गई हैं। हाल ही में मरीन लाइन्स के बॉम्बे हॉस्पिटल में एआई और हेल्थकेयर पर एक सम्मेलन में डॉक्टरों ने प्रतिष्ठित मेडिकल उपकरण स्टेथोस्कोप के भविष्य पर विचार विमर्श किया। यहां विचार विमर्श में यह सामने आया कि हृदय, फेफड़े या अन्य अंगों से आवाज सुनकर बीमारियों का पता लगाने की कला लुप्त होने की ओर बढ़ रही है।

पश्चिमी देशों में चर्चा- 2016 में, जब स्टेथोस्कोप ने अपने बाइसेन्टेनियल (200 साल पूरा होने) माइलस्टोन को छुआ, तो द गार्जियन ने लिखा कि कैसे इसकी उम्र का जश्न मनाने के बजाय, न्यूयॉर्क में एक प्रमुख भारतीय मूल के हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. जगत नरूला ने घोषणा की कि स्टेथोस्कोप मर चुका है। दुनिया इसके अंत की शुरुआत देख सकती है। जबकि जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ मेडिसिन में बाल चिकित्सा के एसोसिएट प्रोफेसर डब्ल्यू रीड थॉम्पसन ने इसका विरोध किया। भारत में भी मेडिकल बिरादरी इस पर पूरी तरह से बंटी नजर आती है। इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट डॉ.

सत्यवान शर्मा के अनुसार, टेक्नोलॉजी में प्रगति से पारंपरिक स्टेथोस्कोप पर निर्भरता कम हो जाएगी। वह एनालॉग एडिशन की भविष्यवाणी करते हैं, जहां डॉक्टर रोगी के कानों और छाती के टुकड़े में एक जांच के जरिये हृदय और फेफड़ों की बात सुनते हैं। स्टेथोस्कोप को इलेक्ट्रॉनिक, डिजिटल और अब एआई-संचालित एडिशन से जबरदस्त कंपीटिशन का सामना करना पड़ेगा। शर्मा कहते हैं कि इसका धीरे-धीरे, आकार बदल जाएगा। डॉक्टर अपने कान और दिमाग का उपयोग करने के बजाय एआई-सक्षम उपकरणों के साथ घूमेंगे। एआई-आधारित उपकरणों में मैन्युअल व्याख्या को सीमित करते हुए तुरंत विश्लेषण और निदान करने की क्षमता होती है।

बदल सकता है स्टेथोस्कोप का रूप- हालांकि, श्वास रोग एक्सपर्ट डॉ लैंसलॉट पिंटो मेडिकल प्रैक्टिस में स्टेथोस्कोप-रहित दुनिया के विचार का मजाक उड़ाते हैं। वह कहते हैं कि यह बस अलग-अलग तरीकों से विकसित हुआ है। एआई-आधारित टेक्नोलॉजी में अब ध्वनिक विश्लेषण शामिल है, जैसे कि उन्होंने आईआईटी में विकसित किया था। यह स्टेथोस्कोप से जुड़ सकता है, साउंड को रिकॉर्ड कर सकता है। साथ ही ग्राफिक रूप से ध्वनियों का विश्लेषण कर सकता है। यह ब्लूटूथ या ऐप के जरिये प्रसारित किया जा सकता है। पिंटो कहते हैं कि लेकिन इन प्रगतियों का मतलब यह नहीं है कि स्टेथोस्कोप किसी मरीज के साथ संपर्क के पहले बिंदु के रूप में गैरजरूरी है। स्टेथोस्कोप हृदय संबंधी अनियमितताओं के लिए दिल की फुसफुसाहट, सांस से जुड़ी समस्याओं के लिए फेफड़ों की आवाज और गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल की जांच के लिए आंत की आवाज का पता लगा सकता है।

तकनीक से साथ होगा बदलाव - एलटीएमजी (सायन) अस्पताल में स्त्री रोग विज्ञान के प्रमुख डॉ अरुण नायक ने कहा हालांकि, इनमें से कई कार्यों को अब नए जमाने के क्लिनिकल उपकरणों का यूज किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि उदाहरण के लिए, भ्रूण डॉपलर मशीनें गर्भावस्था से पहले भ्रूण के दिल की धड़कन सुनने में उत्कृष्ट होती हैं। डॉ. नायक ने कहा कि यह सोचना मूर्खतापूर्ण होगा कि स्टेथोस्कोप तकनीक के साथ नहीं बदलेगा। छह महीने पहले, यूके ने एक कार्यक्रम शुरू किया था। इसके तहत उन्होंने हृदय विफलता के शुरुआती निदान में सहायता के लिए 100 सामान्य डॉक्टरों को एआई-सक्षम स्मार्ट स्टेथोस्कोप तैनात करने की योजना बनाई थी। हालांकि, डॉ. शर्मा का मानना है कि भारत जैसे देश अपने उपयोग में आसानी और सामर्थ्य के कारण दूसरों की तुलना में लंबे समय तक पारंपरिक स्टेथोस्कोप पर निर्भर रहेंगे।

बीमारी का पता लगाने में अहमियत- दिलचस्प बात यह है कि प्रगति के बावजूद, ये क्लासिक उपकरण सभी मेडिकल कॉलेजों में पढ़ाए जाने वाले डायग्नोसिस की आधारशिला बना हुआ है। इंटरनल मेडिसीन एक्सपर्ट डॉ. नितिन कार्णिक ने कहा कि जब तक छात्र दिल की सुगबुगाहट और पेट की आवाज की व्याख्या करना नहीं सीख लेते, तब तक मेडिसीन नहीं सिखाया जा सकता। डॉ. पिंटो ने कहा, असली मुद्दा यह है कि उपकरण का उपयोग करने का कौशल आज के डॉक्टरों के बीच कम हो गया है। उन्होंने कहा, 'क्या हो रहा है कि छात्रों को स्टेथोस्कोप का उपयोग करने के लिए पहले की तरह ट्रेंड नहीं किया जा रहा है क्योंकि उनमें टेस्ट करवाने की बहुत जल्दबाजी है। कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. शर्मा इस बात से सहमत हैं कि केवल स्टेथोस्कोप ही नहीं बल्कि क्लिनिकल डायग्नोसिस की समग्र कला खतरे में है। वे कहते हैं कि जिस क्षण आप किसी मरीज से मिलते हैं, बातचीत शुरू करते हैं, और फिर उनकी शारीरिक जांच

ग्रामीण हावड़ा में गहरा रहा जल संकट भेजा जा रहा है पानी की टंकी

हावड़ा : गर्मी के साथ-साथ ग्रामीण हावड़ा के विभिन्न हिस्सों में जल संकट गहराता जा रहा है। स्थिति से निपटने के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य तकनीकी विभाग ने जिला प्रशासन से हाथ मिलाया है। विभाग संबंधित प्रखंड प्रशासन के माध्यम से उन सभी जगहों पर पानी की गाड़ियां भेज रहा है, जहां पानी की समस्या बढ़ रही है। प्रशासन मानता है कि गर्मी के कारण भूजल स्तर नीचे जा रहा है। इससे कई स्थानों पर ट्यूबवेलों से पानी नहीं बढ़ रहा है। इसी कारण से जन स्वास्थ्य तकनीकी विभाग ने पानी की पाइप लाइन तो बिछा दी है, लेकिन कई स्थानों पर जल स्तर कम होने से पर्याप्त पानी नहीं मिल पा रहा है। जिन गांवों में जनस्वास्थ्य तकनीकी विभाग ने अभी तक पाइप लाइन नहीं बिछाई है या लीफ का काम चल रहा है, वहां संकट गहरा गया है। उन गांवों में ट्यूबवेल ही एकमात्र रास्ता है। लेकिन ग्रामीणों की शिकायत है कि जल स्तर नीचे चले जाने के कारण उन्हें उन ट्यूबवेलों से पर्याप्त पानी नहीं मिल पा रहा है। फिर भी कई ट्यूबवेल खराब पड़े हैं। कई मामलों में शिकायत आई है कि मांग के बावजूद इनकी मरम्मत नहीं कराई जा रही है।

प्रशासन की ओर से उलुबेरिया 1 ब्लॉक के हातागाछा 1 पंचायत में पानी का ट्रक भेजा गया। बीडीओ रियाजुल हक ने कहा, ''इस प्रखंड में नौ पंचायतें हैं। सभी पंचायतों में कमोबेश जल संकट है। सार्वजनिक स्वास्थ्य तकनीकी विभाग को सूचित करने के बाद, उन्होंने हमारे लिए पानी की गाड़ियों की व्यवस्था की। धीरे-धीरे सभी पंचायतों में गाड़ी से पानी भेजा जायेगा।'' जिले के अन्य बीडीओ ने भी यही कहा। विभिन्न ब्लॉकों में खराब पड़े ट्यूबवेलों की समस्या है। कई बीडीओ ने कहा कि खराब पड़े अधिकांश ट्यूबवेलों को बदलना होगा। लेकिन ब्लॉक प्रशासन के पास इसके लिए पर्याप्त पैसा नहीं है। वहीं लोक स्वास्थ्य तकनीकी विभाग के मंत्री पुलक रॉय ने कहा, ''मुख्यमंत्री ने आदेश दिया है कि जहां भी पेयजल संकट हो, वहां पानी की टंकी भेजी जाएं।'' इसी तरह हमने जिलाधिकारियों से भी पूछा है कि कहां जल संकट है। उन सभी जगहों पर पानी की टंकी भेजे जाएंगे। यह व्यवस्था सिर्फ हावड़ा में ही नहीं, बल्कि पूरे राज्य में की गयी है। हाल ही में जब तृणमूल उम्मीदवार सजदा अहमद ने बागनान के ब्राह्मणग्राम में प्रचार किया तो पानी को लेकर निवासियों ने उनके सामने विरोध प्रदर्शन किया था।

बरामद विदेशी हथियारों के चीन से तार जुड़े होने का संदेह

कोलकाता : बंगाल के उत्तर 24 परगना जिले के संदेशखाली में बंद घर से पिछले दिनों तलाशी के दौरान बरामद विदेशी हथियारों के तार अब चीन से भी जुड़ने का संदेह है। सीबीआइ सूत्रों के मुताबिक विदेशी पिस्तौल और रिवाल्वर पर चीनी भाषा में निर्माता का नाम और सीरियल नंबर लिखा हुआ है। यहीं से यह शक गहरा गया है। जांचकर्ताओं के अनुसार पिस्तौल और रिवाल्वर सुरक्षा बलों के पास मौजूद नाइन एमएम पिस्तौल और रूगर रिवाल्वर के समान हैं। मामले की जानकारी केंद्रीय गृह मंत्रालय को भी दी गई है। जरूरत पड़ी तो केंद्रीय खुफिया एजेंसी इस संबंध में सीबीआइ के साथ बैठक भी करेगी। प्रारंभिक तौर पर खुफिया अधिकारियों का अनुमान है कि बांग्लादेश से जल या थल मार्ग से सीमा पार कर हथियार यहां लाए गए हैं। बताते चलें कि सीबीआइ ने शुक्रवार को बंगाल के संदेशखाली में निलंबित टीएमसी नेता शाहजहां शेख के करीबी के घर पर तलाशी के दौरान 348 राउंड गोलियां, चार अत्याधुनिक विदेशी व तीन देशी आग्नेयास्त्र, बम बनाने के मसाले समेत कई बम बरामद किए गए थे। बाद में एनएसजी के बम निरोधक और खोजी दस्ते ने विस्फोटकों को सुरक्षित तरीके से इक्का करने के बाद उन्हें निष्क्रिय कर दिया।

वो शहर, जहां एक ही छत के नीचे रहते सारे लोग, स्कूल-चर्च सबकुछ उसी में

जमीन के नीचे बसे शहरों के बारे में आपने बहुत सुना होगा. लेकिन आज हम आपको एक ऐसे शहर के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां पूरा शहर एक ही छत के नीचे रहता है. पुलिस स्टेशन, चर्च, स्कूल, दुकान और डाकघर सबकुछ एक ही छत के नीचे मौजूद है. लोग परविार की तरह रहते हैं और सब एक दूसरे से अपना सामान शेयर करते हैं. यहां की लाइफस्टाइल इतनी शानदार है क‍ि देखकर आपको भी रंज हो सकता है. लेकिन यहां पहुंच पाना सबके लिए आसान नहीं है. हम बात कर रहे अलास्का के जंगल में बसे एक छोटे से शहर की, जसि‍े वन रूफ सिटी के नाम से भी जाना जाता है. क्योंक‍ि यहां रहने वाले सभी लोग एक ही इमारत में निवास करते हैं. एंकोरेज से 60 मील दक्षिण में बसे इस शहर में सिर्फ एक इमारत है, जिसमें समुदाय के सभी 217 लोग रहते हैं. वे इस इमारत को ही अपना शहर बताते हैं. इस इमारत को बेगिच टावर्स नाम दयि‍ा गया है. इन लोगों की लाइफ स्टाइल बिल्कुल अलग है. आप इस जगह पर कार या ट्रेन से नहीं पहुंच सकते. शहर तक पहुंचने के लिए आपको बंदरगाह जाना होगा. वहां से फेरी लेकर जाना होगा. यह एक डरावनी सुरंग के अंदर से निकलता है, जो रात भर बंद रहती है और सुबह 5 बजे खुलती है.

बेगिच टावर्स की दीवारों के भीतर रहते सभी निवासी : एंटोन एंडरसन मेमोरियल टनल नाम की यह सुरंग उत्तरी अमेरकि‍ा की सबसे लंबी सुरंग है जो 2.5 मील तक फैली हुई है. यह इकलौता रास्ता है, जिसके जरयि‍े आप व्हिटियर एंकोरेज शहर तक पहुंच सकते हैं. व्हिटियर के लगभग सभी निवासी बेगिच टावर्स की दीवारों के भीतर रहते हैं. वे कभी कभार ही बाहर नकि‍लते हैं. कहते हैं क‍ि पहले यह टॉवर सेना का बैरक हुआ करती थी. द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिकी सेना यहां से गुप्त ऑपरेशन चलाया करती थी. लेकिन 1974 में इसे आवासीय बना दयि‍ा गया.

यहां नौकरी के अवसर बेहद कम : जब से इसके बारे में पता चला है, लोग इस जगह घूमने के लिए जाते हैं. वे लोग बताते हैं क‍ि यहां नौकरी के अवसर बेहद कम हैं. यहां रहने वाले एक शख्स ने कुछ महीनों पहले इसके बारे में बताया था. उसने 1986 में व्हिटियर छोड़ दिया था. बताया था कि कैसे उसने बचपन में कोई इंटरनेट, टीवी नहीं देखा. एक रेडयि‍ो था, जसि‍का सग्‍नि‍ल अक्सर खराब रहता था. लेकिन आज बेगिच टावर्स की विशाल 14 मंजल‍ि‍ा इमारत में बहुत कुछ है. यहां अस्पताल है, तो थाना भी. दुकानें हैं, तो चर्च और स्कूल भी. बेगिच टावर्स में रहने वाले बच्चे एक स्कूल में पढ़ते हैं जो एक सुरंग के माध्यम से टावरों से जुड़ा हुआ है, जिसमें एक इनडोर खेल का मैदान भी है.

एक शरीर मे दो रूपों को प्रदर्शित कर श्रीराम का अर्थ समझा रहे हैं बंगाल के सुमन और प्रणिती

आसनसोल : प्राचीन काल मे हिंदू समाज के लोग एक दूसरे को स्वागत करने के लिये जय श्रीराम व जय सियाराम का अभिवादन करते थे, पर समय के साथ -साथ इस देश मे बहोत कुछ बदल चूका है, लोगों के रहन सहन से लेकर लोगों के बोल चाल का तौर तरीका सहित उनके सोंच और विचारों मे भी भारी बदलाव आए हैं, ऐसे मे इन बदलाओं के बिच भी धर्म से जुड़े कुछ हिंदू समाज के लोग अपने पौराणिक प्राचीन कल्चर को कायम रखने की जी तोड़ कोसिस मे जुटे हैं, जिनमे से एक हैं पश्चिम बंगाल आसनसोल नियामतपुर की रहने वाली प्रणिती बैनर्जी व उनके मित्र सुमन चौधरी, दोनों बचपन से ही भगवान श्री राम व माता सीता के परम भक्त हैं, यही कारण है की दोनों मित्र भगवान श्री राम के प्रति लोगों के दिलों मे भक्ति और उनकी ललक जगाने मे कोई भी कसर नही छोड़ते, वह जहाँ भी जाते हैं लोगों को भगवान श्री राम और माता सीता की कथा सुनाते हैं, श्री राम का अर्थ लोगों को समझाते हैं, प्रणिती पेसे से मेकअप आर्टिस्ट है तो वहीं सुमन अभिनय के दुनिया से जुड़े हैं, एक दूसरे के दोनों परम मित्रों ने श्री राम का अर्थ लोगों को समझाने के लिए एक अनोखा कदम उठाया है, जिस कदम से वह और भी चर्चा का विषय बने हुए हैं, सोसल मिडिया पर वायरल हो रही उनके इस अभय चरित्र की खूब प्रशंसा भी हो रही है और हो भी क्यों नही क्योंकि प्रणिती और सुमन ने काम ही ऐसा किया है, प्रणिती ने अपने मित्र सुमन को दो रूपों मे ढाला है, जिसमे पहला रूप राम का है तो दूसरा माता सीता का, यूँ कहें तो एक शरीर मे दो अभय चरित्र जो साधारण ही नही बल्कि असाधारण है, प्रणिती और सुमन इस चरित्र से लोगों को यह समझाना चाहते हैं, यह बताना चाहते हैं की लोगों द्वारा एक दूसरे को सम्मान देने के लिए की जाने वाली वंदना जय सियाराम या फिर जय श्रीराम का असल मतलब क्या है, प्रणिती बताती हैं की राम सीता से अलग नही हैं वह एक ही हैं, यही कारण है की जब भी भगवान राम के नाम का उच्चारण किया जाता है, तब राम के पहले श्री या फिर सिया लगाया जाता है, जैसा की प्राचीन काल के लोगों द्वारा एक दूसरे को सम्मान देने व एक दूसरे का स्वागत करने पर जय श्रीराम या फिर जय सियाराम का अभिवादन किया जाता था, श्री शब्द का अर्थ लक्ष्मी होता है तो वहीं सिया का अर्थ सीता होता है, श्री' शब्द को सम्मान सूचक शब्द के रूप में देखा जाता है, यही कारण है कि आज इनका प्रयोग घर और परिवार के बड़े या समाज में सम्मानित व्यक्ति के लिए किया जाता है। लेकिन आपको जानकर हैरानी होगी कि केवल भगवान विष्णु के नाम के आगे ही 'श्री' लगाने का विधान शास्त्रों में बताया गया है। ऐसा इसलिए क्योंकि श्रीहरि के आगे लगने वाले 'श्री' का अर्थ 'माता लक्ष्मी' है। माता लक्ष्मी के अनेक नामों में से 'श्री' भी उनका एक नाम है। साथ ही इस शब्द के एक अर्थ 'ऐश्वर्य प्रदान करने वाली' भी है। जैसा कि हम जानते हैं माता लक्ष्मी भगवान विष्णु की अर्धांगिनी हैं, इसलिए श्रीहरि कहकर हम भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी को एक-रूप में सम्मान देते हैं। ऐसे मे आपके मन मे भी यह सवाल उठ रहा होगा की भगवान विष्णु के नाम के आगे श्री शब्द का इस्तेमाल आखिरकार किस लिए और क्यों किया जाता है, तो हम आपको बताते चलें की माता लक्ष्मी भगवान विष्णु की पत्नी है। ऐसे मे सवाल यह भी उठता है की प्रभु राम और भगवान कृष्ण के नाम के पहले 'श्री' शब्द का प्रयोग किस कारण होता है, ऐसे मे धार्मिक ग्रंथों में से यह पता चलता है की भगवान राम और कृष्ण को विष्णु जी का ही अवतार बताया गया है। इसलिए उन्हें सम्बोधित करने से पहले श्री का प्रयोग किया जाता है। श्री राम की पत्नी माता सीता और श्री कृष्ण की पत्नी माता रुक्मिणी को भी लक्ष्मी जी का ही अवतार बताया गया है। इसलिए उनको वंदन करने से पहले 'श्री राम' और 'श्री कृष्ण' का प्रयोग किया जाता है, भगवान श्री राम के प्रति उनकी भक्ति की ललक लोगों के अंदर जगाने के लिए प्रणिती और सुमन के इस अनोखे प्रयास की बंगाल ही नही बल्कि पुरे देश मे खूब प्रशंसा हो रही है लोग उनके द्वारा उठाए गए इस कदम को प्रेरणा स्त्रोत के रूप मे भी देख रहे हैं

सोने की ईंट लेकर राम मंदिर पहुंची थी महिला, रामलला को देख दान कर दिए अपने सारे गहने

अयोध्या : रामनवमी के अवसर पर बड़े ही धूमधाम से पूरे देशभर में भगवान राम की पूजा-अराधना की गई। अयोध्या स्थित राम मंदिर में भी भव्य तैयारी की गई थी। इस दिन भगवान राम का 'सूर्य तिलक' भी किया गया। सोशल मीडिया में इन दिनों एक वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें दावा किया जा रहा है कि दिल्ली से अयोध्या आई एक महिला राम मंदिर के लिए सोने की ईंट लेकर पहुंची थी। उसने करीब दो किलो सोना दान कर दिया। वायरल वीडियो में दावा किया जा रहा है कि महिला रामलला को देख भाव विभोर हो उठी। इसके बाद उसने जो भी गहने पहने थे, रामलला को को अर्पण कर दिया। लोग महिला की भक्ति की खूब सराहना कर रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, 'तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा।' दावा किया जा रहा है कि यह रामवनमी दिन की घटना है। राम मंदिर को 22 जनवरी को हुई प्राण प्रतिष्ठा के बाद सिर्फ एक महीने में 25 किलोग्राम सोने और चांदी के आभूषण सहित लगभग 25 करोड़ रुपये का दान मिला था। राम मंदिर ट्रस्ट ने बताया था कि 25 करोड़ रुपये की राशि में चेक, ड्राफ्ट और मंदिर ट्रस्ट के कार्यालय में जमा की गई नकदी के साथ-साथ दान पेटियों में जमा राशि भी शामिल है। हालांकि बैंक खातों में ऑनलाइन माध्यम से भेजे गए चंदे की जानकारी अभी सार्वजनिक नहीं हुई है। रामलला को उपहार स्वरूप मिले सोने-चांदी के आभूषणों और बहुमूल्य सामग्रियों के मूल्यांकन के लिए उन्हें पिघलाने और रख-रखाव की जिम्मेदारी भारत सरकार टकसाल को सौंपी गई है। भारतीय स्टेट बैंक और ट्रस्ट के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं, जिसके मुताबिक स्टेट बैंक दान, चेक, ड्राफ्ट और नकदी एकत्र करने और इसे बैंक में जमा करने की पूरी जिम्मेदारी लेगा।

हर गर्मियों में बर्फ से सैकड़ों प्राचीन हड्डियाँ निकलती हैं, हिमालय की कंकाल झील में

भारतीय हिमालय में, समुद्र तल से लगभग 16,500 फीट ऊपर, रूपकुंड झील स्थित है। एक सौ तीस फीट चौड़ा, यह वर्ष के अधिकांश समय तक जमा हुआ रहता है, एक सुनसान, बर्फीली घाटी में एक ठंढा तालाब। लेकिन गर्म दिनों में, यह एक भयानक प्रदर्शन प्रस्तुत करता है, क्योंकि सैकड़ों मानव कंकाल, जिनमें से कुछ अभी भी मांस से जुड़े हुए हैं, उस स्थान से निकलते हैं जिसे कंकाल झील के रूप में जाना जाता है।

ये व्यक्ति कौन थे और उन पर क्या बीती? एक प्रमुख विचार यह था कि वे 1,000 वर्ष से भी पहले एक विनाशकारी घटना में एक साथ मर गए थे। कई साल पहले के एक अप्रकाशित मानवशास्त्रीय सर्वेक्षण में पाँच कंकालों का अध्ययन किया गया और अनुमान लगाया गया कि वे 1,200 साल पुराने थे।

आज रहने वाली आबादी के आधार पर, ये व्यक्ति तीन अलग-अलग आनुवंशिक समूहों में फिट होते हैं। पुरुषों और महिलाओं सहित तेईस लोगों की वंशावली समकालीन दक्षिण एशियाई लोगों की तरह थी; उनके अवशेष 7वीं और 10वीं शताब्दी के बीच झील में जमा किए गए थे, और एक बार में नहीं। कुछ कंकाल दूसरों की तुलना में अधिक प्राचीन थे, जिससे पता चलता है कि कई लोग जन्मों-जन्मों के अंतराल पर झील में दबे हुए थे।

फिर, शायद 1,000 साल या उसके बाद, 17वीं और 20वीं शताब्दी के बीच, दो और आनुवंशिक समूह अचानक झील के भीतर प्रकट हुए: पूर्वी एशियाई-संबंधित वंश का एक व्यक्ति और, दिलचस्प बात यह है कि पूर्वी भूमध्यसागरीय वंश के 14 लोग। इन सभी व्यक्तियों का अंत कैसे हुआ, इसका अंदाजा किसी को नहीं है। जीवाणु संक्रमण का कोई सबूत नहीं है, इसलिए संभवतः महामारी को दोष नहीं दिया जा सकता। शायद चुनौतीपूर्ण उच्च ऊंचाई वाला वातावरण घातक साबित हुआ।

अमर होने के लिए क्या-क्या खा रहा ये शख्स, 5 साल कम कर ली अपनी उम्र

अमर कोई भी नहीं, ये कहावत तो आपने भी सुनी होगी. जो इस धरती पर आया है, उसे एक न एक दनि तो जाना ही है. लेकिन एक शख्स प्रकृत‍ि के इस नयिम को उलटना चाहता है. वह कभी मरना ही नहीं चाहता. उसका दावा है क‍ि बीते तीन साल में उसने इसे साबित भी कर दिखाया है, और अपनी उम्र 5 साल कम कर ली है. हाल ही में इस शख्स ने बताया क‍ि बुढ़ापा रोकने लिए वह क्या-क्या खा रहा है? कौन-कौन सा ट्रीटमेंट ले रहा है? उसके बारे में जानकर आप भी हैरान रह जाएंगे.

हम बात कर रहे है अमेरक‍ि अरबपत‍ि और टेक टॉयकून ब्रायन जॉनसन की, जो अपनी जैवक‍ि उम्र को उलटने की कोश‍िश कर रहे हैं. वे हमेशा युवा द‍िखना चाहते हैं और कभी मरना नहीं चाहते. हाल ही में उन्होंने बताया क‍ि मौत को धोखा देने के लिए वे रोजाना कौन कौन सी चीजें खाते हैं? क‍िस तरह की लाइफस्टाइल जीते हैं? अपने यूट्यूब वीडियो में जॉनसन ने कहा क‍ि अमर होने के लिए वह रोजाना चॉकलेट खा रहे हैं. वीडियो के कैप्शन में उन्होंने लिखा, कभी-कभी जो चीजें हमारे लिए अच्छी नहीं होती, हम नहीं करते. लेकिन कुछ चीजों के फायदे बहुत ज्यादा होते हैं; चॉकलेट उनमें से एक है.

चॉकलेट से शरीर को होने वाले फायदे बताए – 46 साल के ब्रॉयन जॉनसन ने चॉकलेट से शरीर को होने वाले फायदों के बारे में बताया. उन्होंने दावा क‍िया क‍ि अगर रोजाना आप चॉकलेट खाते हैं तो आपका मस्तिष्क स्वास्थ रहेगा. काम करने की क्षमता ज्यादा रहेगी. याददास्थ मजबूत होगी और खासकर हार्ट आपका एकदम शानदार तरीके से काम करेगा. यह एक चमत्कार की तरह है.

हालांकि, जॉनसन ये भी कहते दिखे कि स्टोर में मौजूद सभी चॉकलेट फायदेमंद नहीं हैं. अगर आप उच्च गुणवत्ता वाली चॉकलेट खाते हैं, तो कई चीजों पर ध्यान देना होगा. सबसे पहली बात, यह शुद्ध होना चाह‍िए. दूसरा, इसमें हैवी मेटल्स की टेस्टिंग होनी चाह‍िए. तीसरा, यह खुला हुआ नहीं होना चाह‍िए और चौथा हाई फ्लेवोनोल इसमें होना चाह‍िए. आप इसे स्टोर से लें या सुपरमार्केट से, इसमें हाई क्वालटी होनी चाहिए. जॉनसन ने ये भी द‍िखाया क‍ि वे इसे खाते कैसे हैं. उन्होंने पाउडर कुछ सुपर सब्जियों और कॉफ़ी के ऊपर भी डाला. जॉनसन अपने एंटी एज‍िंग जुनून के लिए जाने जाते हैं. अपने प्रोजेक्ट ब्लूप्रिंट में उन्होंने भारी इन्वेस्ट क‍िया है, ताक‍ि कोई ऐसी दवा व‍िकस‍ित कर लें, ज‍िससे अमर हुआ जा सके.

सरकार दे रही है बेटियों को अब इतने हज़ार रुपए

केंद्र सरकार और राज्य सरकार की ओर से बेटियों के लिए नई-नई योजनाएं शुरू की जाती है। इसी बीच बेटियों के लिए भी नई योजना शुरू की गई है। इस योजना के तहत बेटियों को 50,000 सरकार की तरफ से दी जा रही है। इसके लिए आवेदन फार्म भी शुरू हो चुके हैं। हाल ही में सरकार की ओर से बेटियों के लिए नई योजना की शुरुआत की गई है। जिसके तहत सरकार बेटियों को 50,000 रूपए आर्थिक सहयोग राशि के तौर पर दे रही है। यह पैसा सरकार कन्याओं को आर्थिक विकास और उसको संभाल प्रदान करने के लिए दे रही है। इन पैसों से बेटियां अपना जरूरतमंद कामों को कर सके फिलहाल के समय में इस योजना का लाभ राज्य की लगभग डेढ़ करोड़ बालिकाओं को दिया जा रहा है। वही इस योजना के लिए आवेदन फार्म भी शुरू हो चुके हैं। जिसके लिए आवेदन की अंतिम तिथि 15 मई तक रखी गई है। बेटियों के लिए शुरू की गई योजना के तहत सरकार की ओर से सबसे पहले ड्रेस के लिए एक से दो वर्ष की उम्र में 600 रूपए दिए जाते हैं। इन पैसों को देने के बाद सरकार की ओर से 3 वर्ष से लेकर 5 वर्ष की उम्र में 700 रूपए दिए जाते हैं। उसके बाद 8 वर्ष की वह 6 वर्ष की आयु में 1000 वह नव वर्ष से लेकर 12 वर्ष की उम्र में 1500 रूपए सरकार की ओर से बेटियों को दिए जाते हैं। यह पैसा मिलने के बाद सरकार की ओर से बेटियों को ग्रेजुएशनडिग्री करने के समय 50000 रूपए की मुफ्त सहयोग राशिदी जाती है। सरकार की ओर से इस योजना का नाम कन्या उत्थान योजना रखा गया है। इस योजना का लाभ लेने वाली बेटियां राज्य की स्थानीय निवासियों ने जरूरी है। इस योजना का लाभ लेने के लिए परिवार के पास बेटी का आधार कार्डबेटी के माता-पिता का आधार कार्ड बेटी की बैंक पासबुक इसके अलावा कक्षा दसवीं और कक्षा 12वीं ग्रेजुएशन की मार्कशीट आवेदन करने वाली बालिका और उसके माता-पिता के मोबाइल नंबर इसके साथ ही पासपोर्ट साइज फोटोग्राफी होने बहुत जरूरी है। यदि इस योजना का लाभ लेने वाली बालिका ग्रेजुएशन की पढ़ाई कर रहे हैं तो उनको 50,000 राशि सरकार की ओर से तुरंत दी जा रही है। यह राशिबालिका को जन्म से ही उनकी शुरू कर दी जाती है जो लगातार मिलती रहती हैं। वही इस योजना के लिए लाभार्थियों को ऑनलाइन मोड में आवेदन करना होगा। जहाँ इसकी आधिकारिक वेबसाइट पर जा कर आप इसे आसानी से भर सकते है और इस योजना का लाभ उठा सकते है।

भारत स्थित रहस्यमयी गांव है कोडिन्ही, जहां पैदा हुए थे 200 जुड़वाँ बच्चे

भारतीय गाँव अपनी फ़सलों, उपज, साक्षरता दर और साफ़-सफ़ाई के लिए प्रसिद्ध हैं लेकिन इस लेख में हम आपको केरल के एक अनोखे गाँव के बारे में बताएंगे। केरल के मलप्पुरम जिले में एक गांव है कोडिन्ही, जहां जुड़वा बच्चों की जन्म दर शायद भारत में सबसे ज्यादा है। कई बार वैज्ञानिकों ने इस दुर्लभ घटना की जांच करने की कोशिश की है, लेकिन जवाब अभी भी उनके पास नहीं है।

पहली नज़र में, कोडिन्ही बिल्कुल सामान्य लगता है। केरल के कई अन्य गांवों की तरह, यह नारियल के पेड़ों से घिरा हुआ है, नहरों से घिरा हुआ है और चावल के खेतों से घिरा हुआ है। लेकिन, जब आप इसकी संकरी गलियों में गहराई से जाते हैं, तो आपको बड़ी संख्या में एक जैसे चेहरे दिखाई देते हैं। भारत का जुड़वां शहर केरल के कोच्चि से करीब 150 किमी दूर इस मुस्लिम बहुल गांव कोडिन्ही की कुल आबादी 2000 है और इनमें से 400 से ज्यादा लोग जुड़वां हैं। ऐसे में इस गांव के स्कूल और पास के बाजार में आपको कई हमशक्ल

बच्चे दिख जाएंगे। ऐसा माना जाता है कि इस गांव में जुड़वा बच्चों का जन्म हुआ था। शुरुआत में कुछ ही वर्षों में जुड़वाँ बच्चे पैदा होते थे, लेकिन बाद में इसमें तेजी आई और अब बहुत तेज़ गति से जुड़वाँ बच्चे पैदा हो रहे हैं। 2008 में, गाँव में पैदा हुए 300 बच्चों में से 30 जुड़वाँ बच्चे थे, जो अच्छे स्वास्थ्य में थे। लेकिन कुछ ही वर्षों में; इनकी संख्या 60 तक पहुंच गई है।

इस रहस्य को सुलझाने की कोशिश कर रहे हैं वैज्ञानिक और शोधकर्ता –पिछले कुछ वर्षों में, विभिन्न संस्थानों के वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं की कई टीमों ने, जो पहले से ही ब्राजील और वियतनाम में एक अध्ययन पर काम कर रहे हैं, हैदराबाद स्थित सीएसआईआर-सेलुलर और मॉड्यूलर जीवविज्ञान केंद्र, केरल मत्स्य पालन और महासागर अध्ययन विश्वविद्यालय (केयूएफओएस) सहित कोडिन्ही गांव का दौरा किया।

लंदन यूनिवर्सिटी के साथ-साथ जर्मनी से भी शोधकर्ता यहां रिसर्च करने आए थे और कोडिन्ही गांव के रहस्य को सुलझाने की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने जुड़वा बच्चों के डीएनए के अध्ययन के लिए कई बच्चों की लार और बालों के नमूने लिए। लेकिन आज भी ये बात एक रहस्य ही बनी हुई है। अब तक वैज्ञानिक भी इसका हल नहीं निकाल पाए हैं।

त्वचा से लेकर शरीर के समग्र स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं, निम्बू पानी या शिकंजी

निम्बू पानी गर्मियों में एक सर्वोत्कृष्ट पेय है, और बहुत से लोग इसे पर्याप्त मात्रा में नहीं ले पाते हैं। यह न केवल सुखदायक है, इसके रोजाना सेवन से कई स्वास्थ्य लाभ हो सकते हैं। नींबू एक खट्टा फल है, जिसमें कई प्राकृतिक गुण पाए जाते हैं। यह विटामिन सी, कैल्शियम, फोलेट और पोटेशियम जैसे पोषक तत्वों का एक पावरहाउस हैं, जो त्वचा से लेकर शरीर के समग्र स्वास्थय के लिए लाभकारी होते हैं। इसके सेवन से प्रतिरक्षा क्षमता बढ़ाने में मदद मिलती है, यह तो सभी जानते हैं। लेकिन इसके अलावा नींबू पानी के रोजाना सेवन से कई अन्य फायदे भी हैं। नींबू के नियमित सेवन से कई स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं ठीक हो सकती हैं। इस लेख में हम जानेंगे कि रोजाना नींबू के रस के सेवन से क्या फायदे हो सकते हैं।

पाचन में करता है सहायता– आपने देखा होगा कि पेट ख़राब होने पर आपकी माँ आपको एक गिलास नींबू का रस पीने की सलाह देती हैं। विटामिन सी से भरपूर होने के कारण, जब आपके पाचन में सुधार की बात आती है तो नींबू पानी बहुत मददगार हो सकता है। यह लीवर

को अधिक पित्त उत्पन्न करने में मदद करता है जो जटिल खाद्य पदार्थों को बेहतर ढंग से तोड़ने में मदद कर सकता है। साथ ही, यह सूजन, सीने में जलन, दस्त और डकार के लक्षणों को भी नियंत्रित कर सकता है। जब आप अपच से पीड़ित हों, तो बस गर्म पानी में थोड़ा नींबू का रस मिलाएं और इसे पीएं।

कब्ज करता है दूर– नींबू पानी आपकी आंत को साफ करने और कब्ज से राहत दिलाने के लिए एक प्रभावी, त्वरित और सरल उपाय हो सकता है। यह एक स्नेहक के रूप में काम करता है जो मल को नरम करता है और आपके मल त्याग को नियंत्रित करता है। यदि आप कब्ज की समस्या से पीड़ित हैं तो आप इनमें से कुछ प्राकृतिक उपचार भी आज़मा सकते हैं।

आपके शरीर को हाइड्रेट करता है– ताज़ा पेय निम्बू पानी गर्मियों के लिए एक आदर्श पेय हो सकता है। यह आपके शरीर में नमक की पूर्ति करने, आवश्यक विटामिन और खनिजों से भरपूर करने और निर्जलीकरण को रोकने का एक शानदार तरीका हो सकता है। इसलिए, कार्बोनेटेड पेय का सहारा लेने के बजाय जो आपको एसिडिटी के अलावा कुछ नहीं देते हैं, निर्जलित और प्यास लगने पर नींबू का रस पिएं।

मोटापा कम करने में मदद करता है

जब वजन घटाने की बात आती है तो विनम्र निम्बू पानी के कई वफादार अनुयायी हैं। नींबू में मौजूद विटामिन सी कुछ रासायनिक प्रतिक्रियाओं को ट्रिगर कर सकता है जो ऊर्जा के रूप में उपयोग के लिए वसा के टूटने में मदद करता है। साथ ही, पेय में फाइबर पेक्टिन प्रचुर मात्रा में होता है जो आपको भरा हुआ रख सकता है और भूख लगने से रोक सकता है। वजन घटाने वाले ये 15 ड्रिंक आपको पतलेपन से फिट तक ले जा सकते हैं।

हैंगओवर करता है ठीक– हैंगओवर से राहत पाने के लिए नींबू पानी भी एक बेहतरीन पेय है। यह अत्यधिक शराब पीने से आपके शरीर से जो कुछ बाहर निकल गया है उसे फिर से भरने में मदद करता है और निर्जलीकरण को दूर करता है। इसके अलावा, यह आपके शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने और हैंगओवर के लक्षणों को दूर करने में भी मदद करता है।

उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करता है– नींबू का रस अपनी उच्च पोटेशियम सामग्री के कारण उच्च रक्तचाप वाले लोगों के लिए अद्भुत काम करता है। निर्जलित लसीका प्रणाली उच्च रक्तचाप के प्रमुख कारणों में से एक है। रोजाना नींबू का रस पीने से आपके लसीका तंत्र को बढ़ावा मिल सकता है और रक्तचाप नियंत्रित हो सकता है।

आप इन 3 आसान आयुर्वेद नुस्खों से भी ब्लड प्रेशर को कंट्रोल कर सकते हैं।

आपकी त्वचा को फिर से जीवंत बनाता है– पेय में मौजूद विटामिन और एंटीऑक्सीडेंट आपकी त्वचा को अंदर से तर–ोताजा कर सकते हैं और आपके चेहरे पर चमक ला सकते हैं। इसकी सफाई क्रिया आपके रक्त को शुद्ध करने में मदद करती है और आपकी त्वचा में अद्वितीय पुनर्स्थापनात्मक और जीवाणुरोधी गुण लाती है।

क्यों हिंदू मंदिर में पूजा शुरू करने से पहले बजाते हैं, घंटियाँ

हिंदू संस्कृति में घंटियाँ बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मंदिरों से लेकर घर की वेदियों तक, इनका उपयोग लगभग हमेशा अनुष्ठानों में किया जाता है। जब आप बच्चे थे तब से आपने संभवतः हर मंदिर में एक घंटी देखी होगी। भले ही आप कभी वहां न गए हों, फिर भी आप उन प्रतिष्ठित बॉलीवुड दृश्यों को देखने से नहीं चूक सकते जो हमेशा मंदिर की घंटी के इर्द–गिर्द घूमते नजर आते हैं। दरअसल, घंटियाँ भी ईसाई परंपरा का एक अभिन्न अंग हैं। पुराने चर्चों में बेल टावर पाए जा सकते हैं। आज भी, कुछ चर्च दिन के दौरान जनसमूह से पहले घंटी बजाते हैं। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि पूजा से घंटियों का इतना गहरा संबंध क्यों है? यहां पूजा में घंटियों के उपयोग के पीछे के सात प्राचीन रहस्यों की एक सूची दी गई है।

–परंपरागत रूप से, पूजा शुरू करने से पहले घंटी बजाई जानी चाहिए, इस इरादे से कि परमात्मा आपके अंदर प्रवेश करे और आपकी आत्मा के भीतर की सभी राक्षसी शक्तियां दूर हो जाएं, और इसके बाहर की भी।

–इसे कई धातुओं और मिश्रधातुओं से तैयार किया गया है और इन धातुओं की मात्रा को सटीक वैज्ञानिक गणना के साथ

मिलाया जाता है।

–परिणामस्वरूप, जब आप घंटी बजाते हैं, तो मस्तिष्क के बाएं और दाएं हिस्सों के बीच पूर्ण सामंजस्य बनता है, जो आपको परम शांति की स्थिति में लाता है।

–प्रतिध्वनि शरीर के सात चक्रों को छूती है, प्रत्येक पर एक मिनट का समय लगता है जो आपके शरीर को पूरी तरह से आराम देता है।

–ध्वनि से उत्पन्न परम शांति की आभा मस्तिष्क में एकाग्रता की शक्ति को अत्यधिक बढ़ाने और मजबूत बनाने की अनुमति देती है।

–बनाया गया वातावरण आपको समाधि की स्थिति में डाल देता है जो शांति और पूजा को दूसरे स्तर पर ले जाता है।

–यह आपको उस प्रार्थना के लिए तैयार करता है जिसे आप शुरू करने जा रहे हैं, आपको जगाता है और आपको प्रार्थना के बारे में जागरूकता की स्थिति में लाता है, ताकि आप एक पल के लिए मंत्रों में खो सकें और अधिकतम आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर सकें।

–एक प्रकार की मंदिर की घंटी भी ओम ध्वनि उत्पन्न करने के लिए डिज़ाइन की गई है, एक ऐसी ध्वनि जिसकी आवृत्ति पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने की आवृत्ति के समान मानी जाती है।

'रामायण' में माता सीता बनेंगी अंजलि अरोड़ा

नितेश तिवारी की 'रामायण' की चर्चा हर तरफ हो रही है, जिसमें रणबीर कपूर और साई पल्लवी भगवान राम और देवी सीता की भूमिका निभा रहे हैं। ये फ्लोर पर चली गई है। इसी बीच, हिंदू महाकाव्य का एक और रूपांतरण चल रहा है। अभिषेक सिंह के डायरेक्शन में बनी प्रकाश महोबिया और संजय बुंदेला की 'श्री रामायण कथा' में सीता के रोल में अंजलि अरोड़ा नजर आएंगी, जिन्होंने 'लॉक अप' में भी हिस्सा लिया था। फिल्म में सीता के रूप में चुने जाने से एक्साइटेड ने कहा, 'मैं इस रोल की पेशकश पाकर धन्य महसूस कर रही हूं। देवी सीता का चरित्र इतना पवित्र है कि इसे कोई भी नकार नहीं सकता। यह जानने की उत्सुकता थी कि डायरेक्टर ने मुझे क्यों चुना, मैंने उनसे पूछा और उन्होंने कहा कि

उन्होंने कुछ हीरोइनों को शॉर्टलिस्ट किया है, जिनमें मैं भी शामिल हूं। मेरा मानना है कि उन्होंने मुझमें कुछ ऐसा देखा जिससे उन्हें यकीन हो गया कि मैं किरदार के साथ न्याय कर सकती हूं। मुझे पिछले महीने फाइनल किया गया था और तब से, मैं वीडियो देख रही हूं, पढ़ रही हूं और सीख रही हूं।

स्वत्वाधिकारी ***'बात हिन्दुस्तान की'*** *(पाक्षिक) पत्रिका के लिए मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती सोनी कुमारी झा, 23 रामकुमार गांगुली लेन, 2रा तल्ला कमरा नं. 203, पोस्ट– बी. गार्डेन, शिवपुर, हावड़ा–711103 (प. बंगाल) फोन न.: 8902221434 से प्रकाशित एवं चपला मुद्रण, 2/3/1, रामजी हजरा लेन, हावड़ा–711101 से मुद्रित, सम्पादक–***उमेश तिवारी,** *फोन– 8420899919 पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी , ईमेल/वेबसाईट–www.baathindustanki@gmail.com*

(Owner, Printer & Publisher of 'Baat Hindustan Ki' : Smt. Soni kumari Jha, 23, Ramkumar Ganguly Lane, 2nd floor, room no-203, PO : B.Garden, Shibpur, Howrah-711103, Mo. 9798848926 & Printed from CHAPLA MUDRAN 2/3/1 Ramji Hazra Lane, Shibpur, Howrah-711101, Editor : **Umesh Tiwari** Mo. 8420899919, Email/Website : www.baathindustanki@gmail.com)